यीशु पौलुस की आँखे खोलते हैं।

बच्चों को पौलुस के धर्म-प्रचार के दर्शन के विषय में शिक्षा दो।

प्रार्थना: प्यारे प्रभु, आपने पौलुस को दर्शन दिया कि वह सुसमाचार को सब लोगों तक पहुचाँए। कृपया हमें भी वही दर्शन दें। हम भी सबको यीशु के बारे मे बताना चाहते हैं।

बच्चों के लिए कोई भी सिखने को गतिविधियाँ चुनिए।

बड़े बच्चों या अध्यापक प्रोरितो के काम अध्याय 22: 1-22 से शाऊल और यीशु को कहानी पढ़े या सुनाए। यह बताती है कि यीशु ने कैसे शाऊल को अन्य देशो के लोगों को यीशु के बारे में बताने के लिए भेजा।

कहानी सुनाने के बाद यह प्रश्न पूछे और विश्वासी उनका जवाब दें। अगर तुम्हें जरूरत है*(हर प्रश्न के बाद उत्तर है)*

1. जब लोगों ने पौलुस को बोलते सुना तो वह क्यों शान्त हो गए (शाऊल का पौलुस हो गया था उसके परिवर्तन के बाद) *(देखें पद 2, वह उनकी भाषा में बोला)*
2.
3. शाऊल को किसने अन्धा बनाया (देखें पद 11)
4. हनन्याह के द्वारा परमेश्वर ने शाऊल को क्या निर्देश दिए (देखें पद 15-16)
5. परमेश्वर ने शाऊल को कहाँ भेजा (देखें पद 21)
6. यहूदियों ने शाऊल (पौलुस) के धर्म-दूत दर्शन के लिए क्या सोचा (देखें पद 22)

कहानी के कुछ भाग का नाटक करें।

- कलीसिया के आराधना अगुवो के साथ बच्चों को संक्षिप्त नाटक प्रस्तुत करने का प्रबन्ध करें।
- नाटक तैयार करने में बच्चों को अपना समय दें।
- आपको सारे भाग नहीं करने हैं।
- बड़े बच्चे छोटे बच्चों को सहायता करें।
- बड़े बच्चे और पुरूष अभिनय करे:

  वर्णनकर्त्ता: जो कहानी को छोटा करके बच्चों को अपने पंक्ति याद करने में मदद करे।

  शाऊल: (बाद में पौलुस नाम पड़ा)

  यीशु की आवाज़

  हनन्याह
- **छोटे बच्चे** अभिनय करें:

  शाऊल के साथी

  यहूदी याजक

  यहूदियो को यरूशलेम में भीड़।

शाऊल के परिवर्तन का नाटक, भाग-एक (प्रेरितों के काम 9:1-11)

वर्णनकर्ता: कहानी का पहला भाग (पद1-11) से बताएँ, फिर कहें, सुनो शाऊल क्या कहता है।

शाऊल: याजको को बताता है। आप राज्य करने वाले याजक हो। मुझे कुछ पत्र दो कि मैं यीशु के अनुयायी को दमिश्क में बन्दी बना सकूँ। परमेश्वर मुझ से यह चाहता है।

शाऊल और उसके साथी: आगे बढ़ते हुए। अचानक शाऊल अपनी आँखे ढक लेता है और चिल्लाकर गिर पड़ता है।

यीशु की आवाज़: (जोर से) शाऊल! शाऊल! मैं यीशु हूँ, जिसको तू सताता है।

साथी: शाऊल का हाथ पकड़कर ले जाते हैं। कहते है, ज्योति ने उसे अन्धा कर दिया।

नाटक, भाग दो (प्रेरितों के काम 9:12-21)

वर्णनकर्ता: कहानी का दूसरा भाग, पद 12-21 से बताओ, फिर कहो, ''सुनो हनन्याह क्या कहता है।''

हनन्याह: शाऊल, परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे लिए प्रार्थना करने भेजा है। तुम्हें रोशनी फिर मिले! तुम गैर - यहूदियो के लिए गवाह होगे। खड़े हो और बपतिस्मा लो।

शाऊल: कहता है, ओह! मैं अब देख सकता हूँ! मेरी शारीरिक आँखे और आत्मिक आँखे अब खुल गई हैं। मैं अब समझता हूँ कि परमेश्वर चाहता है कि मैं यीशु का सुसमाचार सबतक पहुँचाऊ।

यहूदी भीड़: (गुस्से से चिल्लाकर) इस विश्वासघाती से छुटकारा दिलाओ।

''यह नास्तिको की मदद करना चाहता है, जो हमारे शत्रु है''।

वर्णनकर्ता और बड़े बच्चे: जिन्होंने मदद की, सबका धन्यवाद। अगर बच्चे बड़ों के लिए यह नाटक प्रस्तुत करना चाहते हैं तो वह बड़ो से वही प्रश्न पूछें जो इस अध्ययन के ऊपर क्रमांक है।

विचार करे कि पौलुस ने लोगों को यीशु के बारे में बताने के लिए उस दर्शन को कैसे माना। जब कि उसका विरोध किया गया। बच्चो से पूछों, लोग हमें किस तरह परमेश्वर को आज्ञा मानने से रोकते हैं। बच्चों को उदाहरण देने दें।

संसार के नक्शे का **चित्र बनाए।** बच्चे इसको नकल करें। वह अपना चित्र अगली आराधना में बड़ो को दिखा सकते हैं और बताए कि यह दर्शाता है परमेश्वर कैसे संसार के सब लोगों से प्रेम करता है!

व्याख्या करो : परमेश्वर हमें उन लोगों के पास भेजता है जो अभी तक यीशु के बारे में नहीं जानते, जैसे उसने शाऊल को अन्य तरह के लोगों के पास भेजा।

- पवित्र आत्मा अन्य लोगों को आवश्यकताओं को जानने के लिए हमारी आँखे खोलता हैं, जैसे उसने शाऊल की आँखे खोली।
- परमेश्वर हमें दर्शन देकर अन्य स्थानो पर कलीसियॉ शुरू करने की प्रेरणा देता है, जैसे उसने शाऊल को दर्शन दिया।

प्रेरितों के काम अध्याय 1:8 याद करें।

प्रेरितों के काम अध्याय 1:8 से समझाए कि हम अपने लिए चार स्थानों का प्रयोग कर सकते हैं जब यीशु हमें लोगों के पास जाकर अपने बारे में बताने को कहता है।

बच्चे चार स्थानों का उदाहरण दें।

1. यरूशलेम, उस समुदाय के अनुरूप जिस में हम रहते हैं।
2. यहूदा, आसपास के अन्य समुदायों के अनुरूप।
3. सामरिया, आसपास के समुदायों के अनुरूप जो विभिन्न संस्कृति के है।
4. पृथ्वी के छोर तक, जो लोग दूर देशों मे रहते हैं, उनके अनुरूप।

कविताः तीन बच्चे नीतिवचन अध्याय 3:13-15 की एक-एक आयत दोहराएँ।

बड़े बच्चे कविता, गाना था नाटक लिखे, जो सप्ताह का विषय हो।